साधुता को सार्थक करने वाले
बाबा राघवदास

सम्पादकीय विभाग
शान्ति कुञ्ज, हरिद्वार



श्री सत्यभक्त
पूर्व सम्पादक 'चाँद' 'सतयुग' 'प्रणवीर'

युग निर्माण योजना मथुरा

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

BRAHMVARCHAS SHODH SANSTHAN
SHANTIKUNJ, HARIDWAR, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

साधुता को सार्थक करने वाले बाबा राघवदास

गोरखपुर के समीपवर्ती बरहज नगर में गन्दगी की शिकायत बहुत बढ़ गई थी। वहाँ के "नोटी-फाइड एरिया" (म्युनिसिपैलिटी) की लापरवाही से मेहतरों ने कई महीने से पाखाने साफ नहीं किये थे जिससे उनमें बहुत अधिक मैला इकटठा होकर सड़ने लगा था। सब लोग इसकी शिकायत करते थे, पर कोई व्यावहारिक रूप से कदम नहीं उठाता था। यह चर्चा दो-एक बार बस्ती से कुछ फासले पर एक आश्रम में रहने वाले बाबा राघवदास के कानों में भी पड़ी। वे उस समय कांग्रेस के एक प्रमुख कार्यकर्ता थे और गोरखपुर जिले के बड़े नेता समझे जाते थे। उन्होंने दो-एक बार इस सम्बन्ध में "नोटीफाइड-एरिया" के कर्मचारियों को लिखा भी, पर किसी ने उस पर ध्यान देने का कष्ट न उठाया। यह देखकर उनको देशवासियों की कर्तव्यहीनता पर बड़ी खीझ उत्पन्न हुई और उन्होंने स्वयम् आगे बढ़ कर जनता और कर्मचारियों के सम्मुख एक उदाहरण उपस्थित करने का विचार किया। यद्यपि वे उस कस्बे के संचालक एक प्रसिद्ध धार्मिक स्थान के अध्यक्ष और "ब्रह्मचर्य आश्रम" के थे और नगर के प्रतिष्ठित लोग उनको आदर और भक्ति की दृष्टि से देखते थे, फिर भी उन्होंने इन सब बातों का संकोच त्यागकर सफाई काम अपने ही हाथों से करने का निश्चय किया, जिससे लोग अपनी गती जान कर स्वच्छता की महत्ता को समझें। बस दूसरे ही दिन व कस्बे में पहुँच कर दो-चार बहुत गन्दे पाखानों की सफाई में लग गये। मैला बहुत था वह उनके हाथ पैरों में भी काफी लग गया पर वे घबराने के बजाय ैर भी तेजी से काम करने लगे। उनको यह कार्य करते देख नगर वासियों म तहलका मच गया और बड़े लखपती घरों के पुरुष और स्त्रियाँ बाहर निकल

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कर उनके काम में सहायता देने लगे। स्त्रियाँ मैला साफ करते हुये रोती भी जाती थीं कि इतना बड़ा महात्मा हमारे पाखाने को साफ कर रहा है इससे हमको नरक जाना पड़ेगा !

गोरखपुर के स्टेशन पर बाबा जी किसी काम से गये तो लोगों ने शिकायत की कि पानी के नलों में गन्दा पानी आ रहा है और वही लोगों को पीना पड़ रहा है। बाबा जी किसी का ख्याल किये बिना तुरन्त ४५ फीट ऊँची टंकी पर चढ़ गये और जाकर देखा कि महीनों से सफाई न होने के कारण उसके भीतरे कई इंच मोटी काई जम गई है। बाबा जी ने अपने हाथों से थोड़ी काई निकाल ली और उसे ले जाकर वहाँ की एन० ई० रेलवे के जनरल मैनेजर के सामने रख दिया। रेल का वह सर्वोच्च अधिकारी बाबा जी की जन-कल्याण भावना को देखकर चकित रह गया और इसने तुरन्त टंकी की सफाई का आदेश दिया।

सन् १९३४ में गोरखपुर-देवरिया के जिले भयंकर बाढ़ के प्रकोप से त्रस्त थे। गाँव डूब रहे थे और बाबाजी अपने साथियों को लेकर वहाँ के निवासियों की रक्षा-कार्य में जुटे हुये थे। कछार क्षेत्र का एक गाँव डूबने लगा तो बाबाजी गीता प्रेस, गोरखपुर के कुछ कर्मचारियों के साथ नाव लेकर वहाँ पहुँचे। उनको देखकर गाँव वाले स्वयं ही दौड़-दौड़कर नाव में जाकर बैठ गये। बाबाजी एक झोंपड़े में बैठी एक बुढ़िया के पास पहुँचे और कहा—"माता, सब लोग चले गये, तुम नाव पर क्यों नहीं बैठतीं ?" बुढ़िया बोली—"बाबा, हम नाहीं जाइब। मरब चाहे जियब, आपन मँड़ई नाहीं छोड़ब।" बाबाजी ने बुढ़िया की बहुत विनय की तो उसने कहा—"अच्छा, जो हम चली तो हमार चक्की कसे चली ?" बाबाजी ने उत्तर दिया-"मैं चक्की ले चलूँगा।" उन्होंने तुरन्त चक्की के दोनों पाट सिर पर उठा लिये। आगे-आगे बुढ़िया और पीछे-पीछे बाबाजी आधी मील चल कर नाव पर आये। यह दृश्य देखकर दर्शक गण दंग रह गये।

बाल्यावस्था के संस्कार—

इस प्रकार गरीबों की सेवा में अपने को खपा देने वाले बाबा राघवदास

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

 www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जी का जन्म सन् १८९६ में पूना (महाराष्ट्र) में हुआ था। उनका परिवार वहाँ काफी प्रतिष्ठित समझा जाता था और धन-जन से भी भरा-पूरा था। पर सन् १९०३ में जब वे सात वर्ष के थे प्लेग का प्रकोप हुआ और कुछ ही महीनों में एक-एक करके परिवार के समस्त प्राणी काल के गाल में समा गये। अकेला राघवेन्द्र बीमार होकर भी न मालूम किस शक्ति के प्रभाव से बच गया। उसके पश्चात् बहनोई ने उनका पालन-पोषण किया और पढ़ाया लिखाया।

वह युग देश में भयंकर राजनीतिक हलचल का था। लोकमान्य तिलक की ओजस्वी वाणी और लेखनी के प्रभाव से पूना राजनीतिक आन्दोलन का प्रमुख केन्द्र बना हुआ था। उनका "केसरी" और उनके शिष्य शिवराम परांजपे का "काल" देश में क्रान्ति की ज्वाला भड़का रहे थे। राघवेन्द्र उस समय दस वर्ष के ही थे, पर वे भी इस प्रवाह में बहने लगे। सन् १९०७ में जब लालालाजपत राय को देश निकाला हुआ तो उनके अध्यापक ने सभा करके विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का उपदेश दिया। राघवेन्द्र ने भी अन्य साथियों के साथ विदेशी चीनी न खाने की प्रतिज्ञा कर ली। वह दिवाली का अवसर था, जिस पर महाराष्ट्र में बड़ी धूमधाम होती है। जब राघवेन्द्र ने घर जाकर अपनी बहन से कहा कि मैं विदेशी चीनी न खाऊँगा, तब वह बड़ी खिन्न हुई और ऐसी प्रतिज्ञा न करने को समझाने लगी। पर राघवेन्द्र ने कहा कि "हमारे पिताजी ने दस वर्ष की आयु में ही परान्न त्याग की प्रतिज्ञा करली थी और आजन्म उसे निबाहा। तब तू मुझे प्रतिज्ञा छोड़ने को क्यों कहती है?" इस कथन से बहन बड़ी प्रभावित हुई और कहने लगी—— "अच्छा, अब मैं तेरे लिये चीनी के बजाय गुड़ के पकवान बनाऊँगी।"

महाराष्ट्र के युवक उस समय देश के लिये कुछ करके मरने के लिये व्याकुल हो रहे थे। सन् १९०८ में लोकमान्य तिलक को देशनिकाला होने पर तो उत्साह का तूफान ही आगया। सभी नगरों में विद्यार्थियों और मजदूरों की हड़तालें, प्रदर्शन और सभाएँ हुई और खुलकर अँगरेजी सरकार के विरुद्ध नारे लगाये गये। अनन्त नाम के नवयुवक ने नासिक के गोरे कलक्टर को गोली से मार दिया और स्वयं भी हँसते-हँसते फाँसी पर चढ़ गया। ऐसी घट-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नाओं को सुनकर राघवेन्द्र भी बड़े प्रभावित होते थे। उन्होंने भी अपने यहाँ के स्कूलों म हड़ताल कराई। वे और भी कुछ अधिक साहस दिखलाना चाहते थे पर रुग्णता जनित निर्बलता के कारण ज्यादा कार्य न कर सके। साथ ही उनके बहनाई कुलकर्णी ने उन्हें समझाया—"पहले अपनी शिक्षा पूरी कर लो, कुछ समर्थ बन जाओ, फिर जो ठीक समझो वह करना। अयोग्य और असमर्थ मनुष्य कोई बड़ा काम नहीं कर सकता।" बहनोई का कथन उन्हें ठीक जान पड़ा और कुछ समय पश्चात् वे अँगरेजी पढ़ने के लिये बम्बई चले आये।

जन-सेवा की भावना से गृह त्याग—

बचपन मे अपनी आँखों से कुछ ही दिनों के भीतर अपने समस्त परिवार का नाश होते देख कर उनके हृदय में वैराग्य की भावना का उदय हो गया था। इधर राजनीतिक आन्दोलन ने भी उनको बाहर निकल कर कुछ करने की प्रेरणा दी। बस वे अध्यात्म साधना का निश्चय करके चुपचाप बहनोई के घर से चल दिये। बम्बई से हरिद्वार, मथुरा, वृन्दावन, प्रयाग, काशी होते हुये गाजीपुर के मौनी बाबा के आश्रम में जाकर टिक गये। वहाँ तथा आस-पास के अन्य योगी महात्माओं की संगत में रह कर बरहज में अनन्त महाप्रभु के आश्रम में पहुँच कर उनके शिष्य बन गये। और उनका नाम भी "राघवेन्द्र" से बदल कर "राघवदास" हो गया।

इस आश्रम में रह कर उन्होंने कई वर्ष तक कठिन साधना की। वे धीरे-धीरे अपना भोजन घटाने लगे। बहुत दिनों तक केवल एक बार दूध-भात खाते रहे। फिर अन्न को त्याग कर कुछ समय केवल दही, गुड़, आलू आदि पर ही निर्वाह किया। तीन-चार मास बाद उसे भी छोड़कर केवल शीशम की पत्ती पीस कर मट्ठा के साथ पीने लगे। वह दिन भर गुफा के भीतर रह कर ही भजन-साधन करते रहते। दिन भर में केवल दो घंटा के लिये बाहर निकलते थे। इस प्रकार उन्होंने कई वर्ष तक कठिन तपस्या और साधना करके अपने तन और मन को पूर्ण संयमी और अनुशासित बना लिया। अखण्ड ब्रह्मचर्य व्रत धारी तो वे पहले से थे ही। आगे चलकर जब उन्होंने राजनीतिक आन्दोलन में भाग लिया तो उनकी इस प्रकार प्राप्त शारी-

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

 www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



रिक शक्ति और गर्मी, सर्दी, भूख, प्यास, निद्रा आदि को पूर्ण रूप से सहन कर सकने के अभ्यास ने उनका बड़ा साथ दिया। इसी के बल पर वे दिन रात परिश्रम करके जन-सेवा का इतना अधिक काम कर सके कि देखने वाले चकित रह गये। देखते-देखते एक गुफा में रहने वाला साधु संयुक्त प्रांत का ही प्रमुख जन नेता नहीं बन गया, वरन् भारत के सभी भागों में उसकी कार्य-तत्परता की ख्याति फैल गई और बर्मा श्याम, ट्रिनोंडाड जैसे सुदूर स्थित देशों मे रहने वाले हजारों प्रवासी भारत वासी भी जिसके अनुयायी और सह-योगी बन गये।

बाबा राघवदास की मनोवृत्ति सदा से राजनीति और जन सेवा की तरफ उन्मुख रही थी। सन् १९१५ में भी जब वे हिमाचल के उत्तरकाशी स्थान में एक विद्यालय के अध्यापक नियुक्त किये गये, अध्यात्म-चिन्तन के साथ ही "केसरी" "अमृत बाजार पत्रिका" "माडर्न रिव्यू" जैसे पत्र मँगाकर विद्यार्थियों में देशभक्ति के भावों का प्रचार किया करते थे। जब इस बात की सूचना सी. आई. डी. के गुप्तचरों द्वारा उस पहाड़ी रियासत के अँगरेज पोलीटिकल एजंट को मिली तो उसने इन्हें तुरन्त रियासत से निकल जाने का आदेश दिया। उसने कहा कि "तुम उत्तम कोटि के अध्यापक अवश्य हो, पर तुम्हारे विचार राजद्रोही है। इस लिये तुम हमारे यहाँ से निकल जाओ।"

असहयोग आन्दोलन में—

सन् १९२० में भी जब वे अपने गुरु अनन्त महाप्रभु का देहावसान होने पर जनता द्वारा उनके उत्तराधिकारी बना दिये गये और गुफा में रह कर उन्हीं की तरह योगाभ्यास और आध्यात्मिक साधना में लीन थे, उन्होंने गाँधी जी की शङ्खध्वनि सुनी। समस्त देश में असहयोग आन्दोलन की लहर फैलने लगी और सामान्य जनता में से लाखों राजनीतिक कार्यकर्त्ता निकल कर स्वाधी-नता-संग्राम में कूदने लगे। यह देख कर बाबा राघवदास की देशभक्ति की भावना एक दम जागृत हो गई और गुफा में बैठकर भजन करते रहना उनको असामयिक जान पड़ा। थोड़े समय बाद वे कुछ मित्रों की प्रेरणा से सक्रिय राजनीति में सम्मिलित होकर गोरखपुर के सब परि नेता बन गये।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उस समय की मनःस्थिति का वर्णन करते हुये एक बार उन्होंने कहा था—"मैं गुफा में एकान्त-साधना तो कर रहा था पर मुझे बार-बार ऐसा लग रहा था कि जिस समय देश में देवासुर संग्राम चल रहा हो उस समय एक व्यक्ति का एकान्त में छिपकर तप करना कायरता है। मुझे अब जन-संघर्ष से अलग नहीं रहना चाहिये। देव पक्ष की सेना में सम्मिलित होकर आसुरी शक्तियों से युद्ध करना ही चाहिये। उस समय गीता का "मामनुस्मर युद्धयच" (मुझे स्मरण करते हुये लड़ो) वाक्य बार-बार स्मरण आ रहा था।" उन्होंने सुना कि महात्मा गाँधी ने असहयोग आन्दोलन के लिये स्वयं सेवकों की माँग की है। उसी समय महात्मा जी को पत्र लिखा और उत्तर में महात्मा जी सेक्रेटरी श्रीमहादेव देसाई का पत्र आया कि "महात्माजी काशी आ रहे हैं। वहाँ से पटना जायेंगे। आप इन दो में से किसी स्थान पर उनसे मिल लें।" यह पत्र पाकर बाबाजी को परम आत्म-संतोष प्राप्त हुआ। उन्हीं के शब्दों में—कहा जाय तो "जैसे मुर्गा पिंजड़े से निकल कर खुले वातावरण में जाने के सुख की कल्पना करता है उसी प्रकार मैं काँग्रेस के वातावरण में जाने का अनुभव करने लगा।"

उसी वर्ष दिसम्बर में वे काँग्रेस के नागपुर अधिवेशन में शामिल हुये जिसमें देश बन्धुदास और पं० मोतीलाल नेहरू जैसे महान व्यक्तियों ने लाखों रुपया वार्षिक की वकालत छोड़ी और श्री जमनालाल बजाज जैसे सेठों ने राजनीतिक-संन्यास ग्रहण किया। बाबा राघवदास भी वहाँ से असहयोग-संग्राम के एक बड़े सेनानी बन कर लौटे और जनता को गाँधी जी का सन्देश सुनाने में जुट गये। दो महीना बाद ही महात्मा जी देशव्यापी दौरा करते हुये गोरखपुर आये तो बाबा राघवदास ने अपने आश्रम के कुछ पीत वस्त्राधारी विद्यार्थियों को साथ ले जाकर वहीं उनका स्वागत किया। गाँधी जी ने विद्यार्थियों से पूछा कि "पढ़ने के बाद तुम लोग क्या करोगे?"

एक छात्र ने दृढ़तापूर्वक उत्तर दिया—"हम आमरण सीखते रहेंगे, केवल किताबों से नहीं वरन् संसार के अनुभवों से। साथ-साथ देश सेवा भी करेंगे।"

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

महात्मा जी ने प्रसन्नतापूर्वक कहा — "तुम लोग बाबा राघवदास के शिष्य हो, मैं तुमसे यही आशा करूँगा।"

इसके पश्चात् बाबाजी ने गोरखपुर जिले का तूफानी दौरा आरम्भ किया। पर वे वर्तमान समय की तरह कुर्सी पर बैठ कर अन्य कार्यकर्ताओं को आदेश देने वाले अथवा नाम और दाम कमाने में व्यस्त रहने वाले नेता नहीं थे, वरन् निम्न स्तर की और घोर निद्रा में अचेत पड़ी हुई जनता के साथ मिट्टी में बैठ कर काम करने वाले सच्चे अग्रुआ थे। उस दौरे का वर्णन करते हुये उनके एक सहकारी ने लिखा है — "गाँव - गाँव पैदल घूमकर, कोने-कोने में वह गांधी जी का संदेश पहुंचाने लगे। आँधी - पानी, जाड़ा - गर्मी, नदी - नाला, रात - दिन की पर्वाह न करते हुये वह एक गाँव से दूसरे गाँव तीर की तरह पहुँचते थे। छोटे - बड़े सबसे मिलते, दुखियों के घावों को सहलाते, देश-भक्तों को गले लगाते, सभायें करते, भारत के वीरों की कहानियाँ सुनाते, नेताओं का प्रभावशाली परिचय देते और स्वराज्य - संघर्ष के लिये लोगों में उत्साह फूँकते। जेठ-बैसाख की तपती धूल में उन्हें नंगे पाँव दौड़ते देख कर गाँव के स्त्री पुरुष हाय-हाय करने लगते। उस समय ब्रह्मचर्य और नई अवस्था के कारण उनका गौर वर्ण शरीर ऐसा हो रहा था कि सींक से खोद दिया जाय तो खून निकल आवे। अपनी अन्दरूनी मस्ती में वे इतनी तेजी से चलते कि उनके साथ वालों को दौड़ना पड़ता। उनकी त्याग - भावना से किसान बहुत प्रभावित होते थे। एक ही सभा में किसानों ने उन्हें इतने गोरखपुरी पैसे दिये कि उनसे दो बोरे भर गये और तौलने पर उनका मूल्य सात सौ रुपया मिला।"

चौरी चौरा-काण्ड में ९५ अभियुक्तों की प्राण रक्षा—

असहयोग आन्दोलन से घबड़ा कर सरकार ने भीषण दमन आरम्भ किया और लोगों को लाठी, डंडा, जेलखाने की सजा से डरा कर जन-जागृति को कुचलने का प्रयत्न करने लगी। चौरी चौरा नामक गाँव में स्थानीय थानेदार के अत्याचारों से उत्तेजित होकर एक बड़े जन समुदाय ने पुलिस के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

थाने पर आक्रमण करके आग लगा दी जिसमें इक्कीस सिपाहियों सहित थाने-दार भीतर ही जल मरा। इससे देश भर में बड़ी सनसनी फैल गई और सैकड़ों व्यक्तियों को गिरफ्तार करके उन पर हत्या का मुकद्दमा चलाया गया। साल भर तक अदालत में पेशियाँ होते रहने के पश्चात् ११४ व्यक्तियों को फाँसी की सजा सुना दी गई। इसके अतिरिक्त सैकड़ों को काले पानी और कैद का दण्ड़ भी दिया गया। एक मुकदमे में ११४ लोगों को फाँसी की आज्ञा अंगरेजा शासन के इतिहास में अपने ढंग की पहली घटना थी। बाबा राघवदास ने जब इस फैसले को सुना तो वे तड़प उठे। उन्होंने तुरन्त ही सरकारी आज्ञा को भङ्ग करके थाने के पास ही एक सार्वजनिक सभा करके घोषणा की कि इतने व्यक्तियों को मृत्यु दण्ड़ देने का अपना निर्णय सरकार को बदलना होगा। बस उन्होंने इस कार्य में आने वाली कठिनाइयों का ख्याल छोड़ कर अभियुक्तों की पैरवी के लिये तन-मन-धन से प्रयत्न आरम्भ कर दिया। सबसे पहले वे पं० मोतीलाल जी नेहरू के पास पहुँचे और हाई कोर्ट में अपील करने में उनसे सहायता माँगी। पर बहुत अधिक कार्य व्यस्त रहने से वे तुरन्त इस कार्य में सहयोग न दे सके, तो वे मालवीय जी की सेवा में पहुँचे। मालवीय जी का कोमल हृदय ऐसी करुणाजनक स्थिति में कैसे तटस्थ रह सकता था। यद्यपि उनको वकालत छोड़े २५ वर्ष हो चुके थे, पर ११४ व्यक्तियों की प्राण रक्षा के लिये वे पुनः काला लबादा पहिन कर अदालत में खड़े हुये। मालवीयजी ने अपने अपूर्व बुद्धि कौशल से अभियोग की धारा ही बदल दी और ११४ में से ९५ आदमियों की फाँसी का हुक्म हाईकोर्ट ने रद कर दिया। इस सफलता से चौरीचौरा की जनता में तो हर्ष की लहर दौड़ गई. पर सरकारी अधिकारी जल उठे, उन्होंने बाबाजी के एक भाषण को राज द्रोही बतला कर मुकद्दमा चला दिया और सजा दे दी।

कांग्रेस के कानपुर अधिवेशन में भी बाबाजी ने बड़े मनोयोग से कार्य किया और प्रतिनिधियों के भोजन के लिये दस हजार मन तरकारी अपने कार्य क्षेत्र से इकट्ठी करके कानपुर पहुँची दी। रचनात्मक कार्य क्रम में भी वे पूर्ण सक्रियता से भाग लेने लगे थे। खादी और चरखा प्रचार, साम्प्रदायिक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

एक्य की स्थापना, अस्पृश्यता - निवारण, मद्य-निषेध आदि के उन्होंने गोरखपुर के निकटवर्ती प्रदेश में बड़ी तल्लीनता से प्रचार किया जिससे हजारों व्यक्तियों का कल्याण हुआ। जिस समय "सायमन कमीशन" भारत की राजनैतिक परिस्थिति की जाँच करने आया तो उसके बायकाट आन्दोलन मैं बबाजी ने जोर शोर से भाग लिया। उनके प्रचार-कार्य के फल स्वरूप बनारस में कमीशन के आने पर बाजार में पूरी हड़ताल रही और हजारों घरों पर काली झंडिया और झंडे लगाये गये। जब यह कमीशन लाहौर पहुँचा तो उसका बहिष्कार करते हुये लाला लाजपतराय पर लाठी प्रहार हुआ। इस समाचार को जान कर बाबाजी बड़े क्षुब्ध हुये और अपने भाषण में उन्होंने कहा कि —"इस अपमान का बदला लिया जायगा और हमारे नवयुवक सरकार का दामन फाड़ डालेंगे।" इस घटना के बाद उनका झुकाव क्रांतिकारियों की तरफ भी हो गया और भगतसिंह तथा चन्द्रशेखर आजाद उनसे मिलने बरहज आये थे। काकोरी - कान्ड के शहीद श्री रामप्रसाद 'बिस्मिल' को फाँसी होने पर वे उसकी भस्म को बरहज ले आये और अपने आश्रम में उसे एक पक्के चबूतरे के भीतर स्थापित किया। वास्तव में इन दिनों क्रांतिकारियों के त्याग और बलिदान को देखकर उनके प्रति बाबाजी के मन में श्रद्धा और सम्मान का भाव उत्पन्न हो गया था और गाँधीजी के अनुयायी होने पर भी वे उनकी किसी रूप में सहायता करने लगे थे। इस प्रकार वे लोकमान्य तिलक और महात्मा गाँधी - दोनों के एक साथ अनुयायी बन गये।

पीड़ित जनता की सेवा –

यद्यपि इस समय जनता में बाबा राघवदास का सम्मान बहुत बढ़ गया था और गोरखपुर क्षेत्र में तो वे देवता की तरह पूजे जाते थे, पर वे अपने को जनता का एक सामान्य सेवक ही मानते थे। अन्य अनेक व्यक्तियों की तरह वे कुर्सीनशीन नेता न थे। जनता पर जहाँ किसी सङ्कट के आने का समाचार मिला कि वे उसकी सेवा के लिये दौड़े। १५ जनवरी १९३४ को

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जब बिहार में भीषण भूकम्प आया तो राघवदासजी बिना एक दिन की भी देरी लगाये पीड़ितों की सहायतार्थ घटनास्थल पर पहुँच गये। यह भाषण करने अथवा नारे लगाने का कार्य नहीं था वरन् एक मजदूर की तरह परिश्रम करके मरे हुओं की अन्त्येष्टि करना और मरते हुओं को बचाने का प्रयत्न करना था। राघवदास जी अपनी विशेष टोली के साथ टूटे हुये मकानों के मलबे को हटा कर उसमें से लाशों को निकालने, घायलों की चिकित्सा करने, भूख-प्यास से पीड़ित लोगों को खाद्य सामग्री और वस्त्र पहुंचाने का सेवा कार्य करने लगे। वे निरन्तर रक्षा कार्य में ही लगे रहे और इस प्रकार एक महीने के भीतर उन्होंने हजारों लोगों के कष्ट दूर किये। इसके लिए बिहार के बिना ताज के बादशाह राजेन्द्र बाबू ने भी इनके कार्य की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की।

बिहार का काम पूरा नहीं हो पाया था कि गोरखपुर क्षेत्र में जलप्रलय का सङ्कट उपस्थित हो गया। सरयू, राप्ती, छोटी और बड़ी गंडक, तरैना, रोहिणी, चन्दन आदि अनेक नदियाँ हिमालय से निकल कर इस भूभाग में फैली हुई हैं। वैसे तो इनमें सदैव ही कुछ बाढ़ आती रहती है पर सन् १९३४ में भूकम्प के कारण इन नदियों के धरातल पर काफी प्रभाव पड़ा और ऐसी भयङ्कर बाढ़ आई कि ११०० गाँव बह गये। जनता में त्राहि-त्राहि मच गई तथा लाखों मनुष्यों और पशुओं की प्राण रक्षा की समस्या उपस्थित हो गई। इस तरह की बाढ़ें प्रतिवर्ष आती रहीं। सन् १९३८ की बाढ़ में २२५० गाँव बह गये। और भी हजारों ही गाँवों में पानी भरा था। हजारों बीघा फसल बह गई और जो बची थी वह भी पानी में डूबी थी। उस समय बाबाजी का सेवा कार्य देखने लायक था। बहते मनुष्यों और पशुओं को बचाने के लिये जल में कूद पड़ते। नाव में खाने पीने की सामग्री और कुछ सहायक लेकर वे एक गाँव से दूसरे गाँव में बड़ी जल्दी - जल्दी पहुँचते जाते। अपने खाने, पीने, सोने का उन्हें कुछ पता ही न चलता था। वे स्वयं कौपीन पहने रहते और कठिनाई से एकाध बार कुछ चना - चबैना खा लेते, पर बाढ़ पीड़ितों के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

लिये उन्होंने अक्षय भन्डार खोल दिया था। उनके अपील करने पर चारों तरफ से सहायता आने लगी। गाँधी जी ने उनको अहमदाबाद से ७० गाँठ कम्बल भिजवाया। मालवीय जी ने निराश्रित मवेशियों को मिर्जापुर के जङ्गलों में आश्रय मिलने की व्यवस्था की। बर्मा, इन्डोचीन, श्याम, अराकान, फारस तक से प्रवासी भारतीयों ने सहायता भेजी। जहाँ कहीं भी गोरखपुरी व्यक्ति बसे थे वहीं से उन्होंने बाबाजी की अपील पर यथाशक्ति अधिक से अधिक धन संग्रह करके भेजा। बनारस पहुँच कर बाबाजी ने बाढ़ क्षेत्र के पीड़ित लोगों के कष्टों का अपने भाषणों में जो मर्मस्पर्शी वर्णन किया उससे छोटे - बड़े सब प्रभावित होकर सेवा - कार्य में संलग्न हो गये।

इस प्रकार बाबा राघवदास ने अपना तन-मन-धन पूरी तरह से जनता की सेवा में लगा दिया, तो जनता ने भी उनको अपना सच्चा रक्षक समझ कर उनके आदेशों का पालन अपना परमधर्म समझा। सन् १९३५-३६ में कांग्रेस ने नवीन शासन सुधारों की घोषणा होने पर चुनावों में भाग लेने का निश्चय किया। उस समय गोरखपुर की कांग्रेस कमेटी की दशा बहुत गिरी हुई थी। कोष में दस - पाँच रुपयों का भी अभाव था। पर जब चुनाव की घोषणा होने पर बाबा राघवदास कमेटी के सभापति की हैसियत से चुनाव - अभियान आरम्भ किया तो समस्त जनता उनके पीछे थी। सवारी के न होने पर वे पैदल ही "तुलसी दल" बाँटने निकले और ८०० मील की पैदल यात्रा करके घर-घर कांग्रेस का संदेश पहुँचा दिया। नतीजा यह हुआ कि बड़े-बड़े राजाओं और तालुकेदारों को इस लँगोटी वाले साधु के मुकाबले में हारना पड़ा। उनके लाखों रुपयों पर पानी फिर गया पर जनता के अधिकांश वोट कांग्रेस उम्मेदवारों को ही मिले। इस प्रकार उन्होंने यह दिखला दिया कि सच्चे सेवा भाव के सम्मुख धन-बल और रौब दाब की शक्ति प्रभाव रहित हो जाती है।

रचनात्मक कार्य - क्रम —

इन्हीं दिनों बाबाजी ने बरहज में एक "ग्रामोद्योग मेला" लगवाया

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इसमें गाँवों के अनेक लुप्त प्रायः उद्योग धन्धों को पुनः जीवित करने की चेष्टा की गई और उनका श्रेणी - विभाजन भी किया गया। उसमें बढ़ई, लुहार, कुम्हार धोबी, चमार, जुलाहे ग्वाला आदि विभिन्न पेशे वालों की अलग-अलग सभाएँ का गईं। इनमें इन पेशों के विशेषज्ञों के भाषण कराये गये। मनोरंजन की दृष्टि से कहारों का "हुरका", धोवियों का "घंटो", चमारों का करताल-खंजड़ी, अहीरों के विरहा, लोरकी आदि नृत्य - संगीतों का आयोजन किया गया। स्त्रियों के ग्राम गीतों का भी सम्मेलन किया गया। जिस समय सैकड़ों स्त्रियों ने चक्की चलाते हुए अपने प्रचलित गीत सुनाये तो लोगों को प्राचीन काल की एक झलक दिखाई दे गई। बाबाजी ने लोगों को समझाया कि मशीनों से बनी चमकीली-चटकीली दिखाई पड़ने वाली वस्तुओं का मोह छोड़ो और अपने हाथ की बनी वस्तुओं का प्रयोग करो। मशीन उन्हीं देशों के लिये उपयोगी है जहाँ जनसंख्या और पैदावार कम होती है और लोग बड़े देशों में अपने कारखानों में बना माल बेच कर धन कमाना चाहते हैं। पर उत्तर प्रदेश जैसे स्थानों में, जहाँ सात-आठ सौ प्रतिमील की आबादी हो, मशीनों का उपयोग करना लाखों लोगो को बेकार बना देना है।

बाबा राघवदास सच्चे जन सेवक थे। उनकी बातें केवल भाषण देने वालों की तरह श्रोताओं से तालियाँ पिटवाने की युक्ति मात्र न थी; वरन् उन्होंने गरीब से गरीब लोगों के बीच में रह कर उनकी घोर दयनीय दशा का अनुभव किया था। उन्होंने कहा था — "यह वह क्षेत्र है जहाँ के लोग "गोबरहा" और आम की गुठली खाकर प्राण रक्षा करते हैं। "गोबरहा" वह अन्न है जो बैलों के गोबर में से निकाला जाता है। चत-बैसाख में जब फसल की मँड़ाई होती है, तब बैल अनाज खाकर गोबर करते हैं। गरीब चमार उस गोबर को सुखा कर अनाज निकाल लेते हैं और कूट पीस कर खा जाते हैं। इस घोर गरीबी का कारण है खेती पर आबादी का भारी बोझ। जमीन का अधिकांश भाग बड़े जमीदारों और राजाओं के हाथ में है। जो भूमि साधारण जनता के पास है उस पर बहुत बड़ी आबादी का बोझ लदा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हुआ है। खेतों के छोटे-छोटे टुकड़ों पर जीने वाले बड़े-बड़े परिवार हैं। कुछ लोगों के पास जमीन बिल्कुल नहीं है। वे केवल मजदूरी पर निर्वाह करते हैं। इसी कारण यहाँ के लाखों लोग नौकरी के लिये बाहर चले गये हैं। वे लोग बाहर से कुछ रुपया बचाकर भेजते हैं तब उनके परिवार वाले पेट भर सकते हैं। यहाँ का एक मात्र उद्योग चीनी बनाने की कुछ मिलें हैं। छोटे-छोटे गृह-उद्योग जिनसे लोग स्वावलम्बी हो सकते थे, मर गये हैं। जब तक इस क्षेत्र का औद्योगीकरण न होगा तब तक यहाँ की भयंकर गरीबी नहीं मिटेगी। बड़े उद्योगों की बात बड़े लोग सोचें छोटे उद्योगों की बात हम सोचेंगे।"

इसी सन्दर्भ में वे लोगों को "स्वदेशी-धर्म" का उपदेश दिया करते थे। एक तो वे स्वभाव से ही भारतीय संस्कृति के उपासक थे और प्राचीन काल के सादा रहन-सहन को पसन्द करते थे, दूसरे उस जमाने में तो विदेशी विदेशी वस्तुओं के कारण देशी कारबारों का लोप हो जाने से करोड़ों भारत वासियों के सामने बेकारी और निर्धनता की समस्या उत्पन्न हो गई थी। इसलिये सभी भारतीय नेताओं ने स्वदेशी उद्योग धन्धों को पुनर्जीवित करने का समर्थन किया था। पर बाबा राघवदास उन नेताओं में से थे जो केवल आर्थिक दृष्टि से ही उद्योग धन्धों की वृद्धि के लिये प्रयत्न करना पर्याप्त नहीं समझते थे, वरन् "स्वदेशी" की भावना को एक धर्म का रूप देकर अपना समस्त रहन-सहन तथा आचार-विचार, आदर्श तक भारतीयता के साँचे में ढालना आवश्यक समझते थे। यही कारण था कि बाबा राघवदास राजनीतिक स्वाधीनता और समाज सुधार के लिये तन-मन-धन सर्वस्व अर्पण करके भी भारतीय संस्कृति को भी याद रखते थे। उन्होंने कितनी ही बार बड़े-बड़े यज्ञ कराये जिनमें बड़े परिमाण में हवन सामग्री और घृत की आहुतियाँ दी गईं। पूजा अर्चा, कथा-वार्ता, व्रत-त्यौहार का कोई अवसर सामने आ जाने पर उसमें भी वे उत्साह पूर्वक भाग लेते थे। इस दृष्टि से हम उनको एक आदर्श साधु की पदवी दे सकते हैं। वे अपने पुरातन धार्मिक विश्वासों और नियमों के साथ-साथ देश-काल की दृष्टि से आवश्यक कार्यों में भी पूर्ण रूप संयोग देते थे और अपनी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तपस्या तथा त्याग द्वारा अर्जित आध्यात्मिक कमाई को निःस्वार्थ भाव से जन-गण के हित-साधन में व्यय करते थे।

कूपदान और जलाशयों की रक्षा—

बाबा राघवदास को दीन हीन लोगों के कष्टों का कितना अधिक ध्यान रहता था और वे उनकी दुर्दशा को देख कर कैसे विह्वल हो जाते थे इसके एक नहीं सैकड़ों हजारों उदाहरण लोगों को याद है। इसी तथ्य को समझ कर संत विनोबा भावे ने बाबाजी के "स्मृति-ग्रन्थ" की चर्चा चलने पर कहा था कि "असंख्य लोगों के पास उनके असंख्य संस्मरण हैं। उनमें से पुस्तक में कितने भरोगे और कितने नहीं भरोगे ?" फिर भी लोगों ने उनके सैकड़ों संस्मरण एकत्रित करके बड़े आकार के ४५० पृष्ठ का ग्रन्थ तैयार कर ही दिया।

जिस समय बाबाजी सन्त विनोबा के साथ विहार का दौरा कर रहे थे उन्होंने दो बहिनों को कुँये से पानी निकालने के सम्बन्ध में लड़ते देखा। पता लगाने पर ज्ञात हुआ कि उन अभागे ग्रामीणों को पीने के लायक पानी मिलने में भी बड़ी कठिनाई होती है। एक तो वहाँ कुँये ही बहुत कम है, फिर हरिजनों को तो सार्वजनिक कुँओं पर चढ़ने ही नहीं दिया जाता। उन लोगों ने जो एक कच्चा कुँआ खोदा तो वह बहुत कम पानी देता था और इसी से लोगों में प्रायः पहले पानी खींचने पर कहा—सुनी और झगड़ा हो जाता था। बाबा राघवदास ने जब यह दृश्य देखा तो उनकी अन्तरात्मा रो उठी कि इन गरीबों को पानी भी दुर्लभ है, अन्य सुख-सुविधाओं की तो बात ही क्या ! उन्होंने यह बात विनोबा जी तथा अन्य कार्यकर्ताओं से कही और इसके निराकरण का कोई उपाय ढूँढ़ने का आग्रह किया। उस समय स्वर्गीय जमनालाल बजाज की धर्मपत्नी श्रीमती जानकी देवी भी वहीं थीं। राजस्थान से सम्बन्धित होने के कारण वे जलाभाव के कष्ट को विशेष रूप से अनुभव करती थीं। बस, उन्होंने इस कार्य का भार अपने ऊपर लेकर "कूप-दान" का आन्दोलन आरम्भ कर

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दिया और कुछ ही समय में सब श्रेणियों के व्यक्तियों से सहायता लेकर लगभग एक हजार कुँये बनवा दिये।

एक यही घटना नहीं बाबाजी साधन हीन ग्रामीणों के हित की दृष्टि से सदैव इस प्रकार की योजनायें लोगों के सामने उपस्थित करते रहते थे। वे जानते थे कि वैसे तो जल मनुष्यमात्र के लिये प्राण दाता है, पर खेती बारी पर निर्वाह करने वाले करोड़ों ग्रामीणों की जीवन रक्षा तो उसके बिना होही नहीं सकती। इसलिये उन्होंने कूप निर्माण के साथ ही तालाबों की सुरक्षा पर जोर देते हुए कहा—

"जहाँ पानी की इतनी कमी है" वहाँ मैंने एक तालाब में भैंसें घुसी देखी। आप तालाबों की महिमा को भूल गये हैं। हमारे यहाँ आज भी यह रिवाज चला आता है कि विवाह के समय वर-वधू पोखरा खुदाई का संस्कार करते हैं। इसके पीछे बड़ी ऊँची भावना है। तालाब बड़ा गुप्तदानी होता है। वह अपने को सुखाकर दूसरों को नमी देता और हरा-भरा करता है। गृहस्थ का जीवन भी तालाब जैसा ही है, वह भी समाज की सेवा उसी गुप्त ढंग से करता है। तालाब में लक्ष्मीजी का निवास है। लक्ष्मी और सरस्वती को कमल सर्वाधिक प्रिय है। हमने अभी तक इस कमल को न कूँए में देखा है, न नदी में, न नहर में, न समुद्र या ट्यूबवेल में। यह कमल तो तालाब में ही होता है। हमने तालाबों को पाट कर अपने गृहस्थ जीवन के संस्कारों को समाप्त किया और लक्ष्मी, सरस्वती तथा भगवान को अप्रसन्न किया। जिसके फलस्वरूप हम बुद्धिहीन, विवेकहीन और दरिद्र होते जा रहे हैं। मेरा नम्र सुझाव है कि आप लोग इसकी महिमा को समझें और तालाबों की रक्षा करें।"

कुष्ठ रोगियों की सेवा—

कुष्ठ रोग कितना भयंकर होता है और साथ ही समाज और परिवार वाले भी कुष्ठरोगी के प्रति कितनी उपेक्षा का व्यवहार करते हैं, यह सभी को विदित है। गोरखपुर की तरफ इस रोग की प्रबलता थी और उस जिले के हजारों व्यक्ति इससे पीड़ित होकर कष्टमय जीवन व्यतीत करते थे। उनकी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दुर्दशा देखकर बाबा राघवदास को बड़ी करुणा हुई और अपनी आदत के अनुसार उन्होंने उनकी सेवा का भार भी अपने कन्धों पर उठा लिया। उन्होंने इसाई मिशनरियों के कुष्ठाश्रम देखे और १ अगस्त १९५१ को गोरखपुर में एक कुष्ठाश्रम की स्थापना कर दी। बाबाजी की सच्ची लगन को देख कर सरकारी, गैर सरकारी सभी श्रेणी के लोगों ने इस कार्य मे सहयोग दिया और दस वर्ष के भीतर ही इस आश्रम की पंद्रह-बीस शाखायें विभिन्न स्थानों में स्थापित होकर रोगियों की सेवा करने लगीं। गोरखपुर के आश्रम में १५० रोगियों को चिकित्सालय में रखकर सेवा करने की व्यवस्था है। अन्य स्थानों में रोगियों को रखने की व्यवस्था तो कम है, पर उनने घर पर ही अच्छी से अच्छी औषधि बिना मूल्य देने की व्यवस्था है। इससे प्रति सप्ताह चार पाँच हजार रोगी लाभ उठाते हैं और अब तक लाखों व्यक्ति रोग मुक्त होकर साधारण जीवन बिता रहे हैं। गोरखपुर के आश्रम में रोगियों की चिकित्सा के साथ ही उनको कताई-बुनाई, जूता निर्माण की कला भी सिखाई जाती है। इससे रोग से छुटकारा पाते-पाते वे अनेक अंशों में स्वावलम्बी भी हो जाते हैं और अपने गाँवों में वापस जाकर स्वतंत्रता पूर्वक अपना निर्वाह कर सकते हैं।

प्राकृतिक चिकित्सा का प्रचार–

बाबाजी शुरू से ही औषधि सेवन के विरुद्ध थे और जब कभी कोई बीमारी हो जाती तो उसका उपचार स्वाभाविक ढंग से ही करते थे। जब वे स्वतंत्रता संग्राम में गिरफ्तार होकर जेल मे बन्द थे तो उनको भयंकर रूप से चेचक हो गई। उससे किसी प्रकार बच तो गये पर आँखों की रोशनी प्रायः समाप्त हो गई। उन्होंने इस की सूचना गाँधी जी को देकर उनकी सम्मति पूछी तो उन्होंने "राम नाम" की चिकित्सा का परामर्श दिया। बाबाजी प्राकृतिक आहार और पानी का प्रयोग करने लगे। जब वे जेल से निकले तो दो चश्मा लगा कर पढ़ सकते थे। पर पानी का "पामिङ्ग" करते-करते कुछ वर्षों में दोनों चश्मे छूट गये और बुढ़ापे में वे सामान्य रूप से लिखने-पढ़ने लग

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गये । इसी प्रकार बीमारी के असर से उनके सरके बाल उड़ गये थे, उसको भी उन्होंने हरे रङ्ग की भीगी हुई पट्टी से बालों को पोंछ-पोंछ कर ठीक कर लिया । बाल फिर से आ गये और काले भी होने लग गये ।

सन् १९५० में वे एक मोटर दुर्घटना में घायल होकर अस्वस्थ हो गये । डाकटरों ने इलाज का बड़ा आग्रह किया पर उन्होंने दवा नहीं खाई । केवल प्राकृतिक चिकित्सा करते रहे । पर भीतरी चिकित्सा न होने से उनको जलोदर हो गया । तब वे डा० अप्पाजी के साथ उरलीकांचन (पूना) चले गये और वहाँ से पूर्ण रूप से स्वस्थ हो कर वापस आये ।

इस सफलता से वे प्राकृतिक चिकित्सा के बड़े भक्त बन गये और उसके प्रचार में जुट गये । उन्होंने डा० अप्पा जी को गोरखपुर बुलवाया और प्राकृतिक चिकित्सा के बीसियों शिविर लगवाये । फिर अपने आश्रम बरहज में तथा गोरखपुर में ही प्राकृतिक-चिकित्सालय खुलवाये । गया सर्वोदय सम्मेलन में इन्होंने कलकत्ता के श्री धर्मचन्द्र सरावगी को इस कार्य की प्रेरणा दी । बाबाजी की बातें उनकी समझ में आगईं और उनके प्रयत्न से कुछ ही समय में अखिल भारतवर्षीय प्राकृतिक चिकित्सा परिषद की स्थापना हो गई जो आज इस पद्धति का देशव्यापी प्रचार कर रही है । जब बरहज और गोरखपुर के आश्रमों की व्यवस्था आर्थिक कठिनाइयों के कारण डांवाडोल होने लगी तो उन्होंने "गांधी निधि" की कोषाध्यक्ष डा० सुशीला नैयर से कहा कि म० गांधी ने प्राकृतिक चिकित्सा के प्रचार के लिये सदैव प्रेरणा दी थी, तो अब उसे गांधी निधि में से सहायता क्यों न दी जाय ? सुशीला नैयर ने उनकी बात को मान लिया और बाबाजी के स्थापित दोनों चिकित्सालय प्रतिवर्ष कई हजार रोगियों को लाभ बहुँचाते रहे । बाद में डा० सुशीला भारत सरकार की स्वास्थ्य-मंत्री हो गईं तो उन्होंने प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति को सरकारी सहायता दिये जाने की योजना बनाई जिससे अनेक संस्थाओं की अच्छी प्रगति हुई ।

राष्ट्र-भाषा की सेवा—

बाबा राघवदास का जन्म यद्यपि महाराष्ट्र में हुआ था और उनकी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मातृभाषा मराठी थी, पर उत्तर प्रदेश में रहने के कारण उन्होंने हिन्दी बहुत अच्छी तरह सीख ली थी। गोरखपुर प्रदेश की भोजपुरी बोली में ऐसी शुद्धता पूर्वक भाषण दे लेते थे कि वहा के बहुसंख्यक मूल निवासी भी वैसा नहीं बोल पाते थे। इसके पश्चात् उन्होंने महात्मा गाँधी के आदेश से बहुत वर्षो तक विभिन्न प्रांतों में हिन्दी प्रचार का काम भी किया। उस समय अनेक उर्दू के पक्षपाती "हिन्दुस्तानी', के नाम से उसी को राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलाने का आन्दोलन कर रहे थे। मुसलमानों से मेल मिलाप बनाये रखने के लिये महात्मा गाँधी और उनके कुछ अनुयायी भी हिन्दी-उर्दू मिली जुली भाषा का समर्थन करने लगे थे, पर बाबा राघवदास ने सदा शुद्ध हिन्दी का ही पक्ष लिया और उसके लिये सदैव संघर्ष करते रहे। इस सम्बन्ध में उन्होंने स्वयं एक बार लिखा था—

"उर्दू का षडयन्त्र वर्षों से चल रहा था जो हमारी राष्ट्रीय एकता और प्रशासन की कड़ियों को छिन्न-भिन्न कर देने वाला था। अतः मैंने इसका सक्रिय विरोध करना आवश्यक समझा। ससार में अपनी मातृभाषा का यदि सब से अधिक अपमान सहन किया है, तो इसी अभागे उत्तर प्रदेश ने किया है। जन गणना में अपनी भाषा को उर्दू या हिन्दुस्तानी लिखाया जो अकर्मण्यता का सूचक है। १९४१ की जन गणना में मैं बनारस जेल में था। वहाँ गणक ने मेरा नाम लिख कर मातृभाषा के खाने में हिन्दुस्तानी लिखा। इसके लिये मैंने हल्ला मचाया और मराठी लिखा कर ही दम लिया। उत्तर प्रदेश के किसी क्षेत्र में उर्दू नहीं बोली जाती, अतः वह क्षेत्रीय भाषा नहीं हो सकती। यदि ऐसा हुआ तो मैं पहला व्यक्ति हूँ जो मराठी के लिये लड़ूंगा। उत्तर प्रदेश में बहुत बंगाली है, उनसे कहूँगा कि बंगाली के लिये लड़ें। महाबोधि सोसायटी और बौद्ध भिक्षु भी चीनी, स्यामी और ब्रह्मी के लिये लड़ेंगे। उस समय बाबा राघवदास को लोग विद्रोही के रूप में देखेंगे। यदि उत्तर प्रदेश में दम नहीं है तो महाराष्ट्रीय होते हुये भी राष्ट्रभाषा हिन्दी की राष्ट्रीय एकता को अक्षुण्ण रखने के लिये मैं मर मिटूँगा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

"इधर एक वर्ग अपने को उर्दू का भाग कह कर उत्तर प्रदेश में हिन्दी के साथ उर्दू को भी सरकारी भाषा बनाने के फेर में राष्ट्रभाषा की प्रगति को रोक रहा है। जिस प्रदेश में कठिनाई से १४ या १५ या अधिक से अधिक २० प्रतिशत उर्दू लिखने पढ़ने वाले हों, उनके लिये सरकारी भाषा उर्दू कराई जाय यह तब ही संभव हो सकता है जब बाकी ८० प्रतिशत लोग राष्ट्रद्रोही हों, या कायर हों। इन उर्दू-भक्तों ने अँग्रेजी हकूमत में मर्दुमशुमारी में चाल चल कर या सरकारी अधिकारियों पर नाजायज दबाव डाल कर उर्दू को अदालती भाषा बनवा लिया। इससे यह तरीका आज भी जारी रखा जाय, जब कि बालिग मताधिकार हो जाने से लोगों को अपने बहुमत का भी ख्याल पैदा हो गया है, यह सर्वथा असंभव है।

"इस संकीर्ण मनोवृत्ति वाले लोग आज भले ही अपने जोश में आगे-पीछे का ध्यान न रखें, पर वे भविष्य में उर्दू के प्रति घृणा पैदा करने में ही सहायक होंगे। जब बहुमत यह देखेगा कि ये अराष्ट्रीय वृत्ति वाले राष्ट्र-भाषा की प्रगति में रोक लगा कर अपनी बात मनवाने की ही फिक्र में हैं तो बहुजन को यह अधिकार होगा कि इन अपराधियों को न्यायतः सजा दें। जब कि बहुमत कहता है कि ८० प्रतिशत हिन्दी भाषा-भाषी उत्तर प्रदेश तथा बिहार में है, तब सरकार उर्दू को सरकारी-भाषा बनाने का आदेश देकर कठिनाई में पड़ना क्यों पसन्द करेगी ? कहाँ तो ये उर्दू वाले अपने बच्चों को उर्दू पढ़ाने वाले स्कूलों की माँग कर रहे थे और कहाँ ये अदालत में पहुँचने की लम्बी दौड़ मारने लगे। अपनी चादर देख कर पैर फैलाना अच्छा होता है। नहीं तो चादर फट जाने की हानि उनको उठानी पड़ेगी।"

राघवदासजी ने राष्ट्रभाषा का इस प्रकार दृढ़तापूर्वक समर्थन ही नहीं किया वरन् भारत के सभी प्रांतों में—पर्याप्त समय तक टिक कर हिन्दी-प्रचार में सक्रिय भाग भी लिया। सिन्ध, उड़ीसा, बंगाल में उन्होंने विधिवत् शिक्षा-संस्था स्थापित करके सैकड़ों व्यक्तियों को हिन्दी सिखाई, आसाम में तो वे काफी समय तक काम करते रहे। इसके विषय में स्वयं गाँधी जी ने हिन्दी

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org ।

साहित्य सम्झेलन के अध्यक्षीय भाषण (सन् १९३५) में कहा था—"बेचारे बाबा राघवदास उत्कल, बंगाल, आसाम में हिन्दी प्रचार के लिये अथक प्रयत्न कर रहे हैं। कुछ सफलता भी मिली है, पर उसे नहीं के बराबर ही माननी चाहिये। जो कुछ भी सहायता उनको दिला सकता था वह दिलाने की चेष्टा भी मैंने की है। बाबाजी की मार्फत आसाम में गोहाटी, जोरहट, शिवसागर और नौगाँव में प्रयत्न हो रहा है। वहाँ १३० विद्यार्थी पढ़ते हैं। आसामी प्रतिष्ठित लोग इस प्रचार-कार्य में कम रस लेते हैं।"

उड़ीसा में भी बाबाजी ने हिन्दी-प्रचार का कार्य बड़े परिश्रम और लगन के साथ किया। इस सम्बन्ध में उस प्रान्त की "राष्ट्र-भाषा प्रचार समिति" के प्रमुख कार्यकर्ता श्री अनुसूइया प्रसाद पाठक ने अपने संस्मरणों में लिखा है—

"बाबाजी हिन्दी-प्रचार कार्य के सम्बन्ध में कई बार कटक आये। वे एक सुन्दर वक्ता थे, प्रथम कोटि के और सच्चे भक्त तथा ईश्वरोपासक थे। महन्तों, मठाधीशों जैसी विलास पूर्ण भोग लिप्सा उनमें नहीं थी। मैंने उन्हें कई दिनों तक केवल कच्ची मूँगफली और गुड़ पर निर्वाह करते देखा। वे सच्चे अर्थ में एक तपस्वी साधु थे। एक बार मैं उनके साथ कटक से पुरी के लिये पैदल चला। मैं उनके सामने बच्चा था, लेकिन वे उड़ते चलते थे। उनके साथ उनका जो कम्बल, लोटा, लँगोटी आदि थे उनको भी स्वयं ही उठा कर चलते थे, आग्रह करने पर भी किसी को देने को तैयार नहीं थे। नाना प्रकार की ज्ञानमयी बातें करते, सुन्दर काम करने का उपदेश देते, स्वराज्य मिल जाने के बाद हिन्दी का क्या स्थान होगा इसकी उत्साहमयी चर्चा करते चल रहे थे।"

अत्यन्त सादा रहन-सहन और अपरिग्रह—

यद्यपि बाबा राघवदास एक प्रसिद्ध धर्म स्थान के महन्त थे और चाहते तो जनता से खूब भेंट चढ़ावा प्राप्त करके अन्य धर्माध्यक्षों की तरह आराम

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

 www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

और शान की जिन्दगी व्यतीत कर सकते थे,पर उन्होंने अपना रहन-सहन और खाना-पीना सदैव एक बिल्कुल गरीब श्रेणी के व्यक्ति की तरह रखा। कांग्रेस के लिये लाखों रुपया चन्दा एकत्रित कर लेने पर भी वे अपना भोजन खर्च दो-चार आना से अधिक नहीं होने देते थे। ऐसा करने में उनका आध्यात्मिक उद्देश्य भी रहा करता था। भूदान की पद-यात्रा करते समय एक बार उन्होंने कहा—

'आत्मा और शरीर दोनों का अस्तित्व हम अनुभव करते हैं। इन दोनों की ओर जब हम उचित ध्यान देते हैं, तभी हमारा सन्तुलन बना रहता है। पर अक्सर होता यह है कि आत्मा की ओर कम ध्यान दिया जाता है और शरीर की सुख-सुविधा का ख्याल करने में ही मनुष्य इतना डूब जाता है कि अन्त में वह उसके लिए भार बन जाता है। मानसिक परेशानी बढ़ जाती है, फलतः आत्म सन्तोष का अनुभव न होने से वह सदा अतृप्त ही रहता है। भूदान की प्रक्रिया द्वारा हम मनुष्य को भौतिक सुखों का भार कम करने को कहते हैं। ज्यों-ज्यों यह भार कम होगा, त्यों-त्यों उसको न केवल हल्कापन मालूम होगा बल्कि उसका आत्म सन्तोष भी बढ़ेगा। महापुरुषों ने जो स्वेच्छया गरीबी स्वीकार करली, उसका कारण यही है कि शरीर-चिन्तन में आवश्यकता से अधिक समय तथा शक्ति नष्ट न करनी पड़े। भगवान बुद्ध का मार्ग तथा बापू का समाज सेवा-धर्म यही पाठ हमें पढ़ाते हैं, सिखाते हैं।

"समाज तथा व्यक्ति दोनों एक दूसरे पर अवलम्बित हैं। समाज में अनेक व्यक्ति हैं इसलिये अकेले व्यक्ति का समाज की तरफ खिंच जाना स्वाभाविक है। पर व्यक्ति जब समाज से पृथक रहने की कोशिश करता है, तो वह दुर्बल हो जाता है। ज्यों-ज्यों उसकी संग्रह-वृत्ति बढ़ती जाती है, त्यों त्यों अलगाव अधिक अनुभव होता है और जो समाज हमारा हितैषी मालूम पड़ता था, उससे वह भय खाने लगता है। संग्रह के साथ अविश्वास भी बढ़ जाता है। मनुष्य के बीच जो अपनापन है, सौहार्द है, वह भी घट जाता है।"

इस प्रकार बाबा राघवदास वाणी और कृतत्व-दोनों विधियों से अपने देशवासियों को वैराग्य और अपरिग्रह का उपदेश देते रहे। पर न तो उन्होंने

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कभी किसी को घरबार छोड़कर साधु बन जाने की प्रेरणा दी और न रोजगार, व्यवसाय से मुँह मोड़कर कमण्डलु और लँगोटी ग्रहण करने की। यद्यपि वे अपनी परिस्थिति और मनोवृत्ति के अनुकूल साधु बन गये थे, पर उनकी दृष्टि में ये बातें केवल बाह्य प्रतीक मात्र थीं; वे अच्छी तरह जानते थे कि यद्यपि गाँधी जी अन्त तक गृहस्थ के रूप में ही रहे, कभी किसी से दीक्षा लेकर साधु-संन्यासी नहीं बने, पर उस समय उनसे बढ़ कर त्यागी, तपस्वी, साधु और कोई न था। बाबाजी ने स्वयं भी देश-काल की आवश्यकता को समझ कर अपने साम्प्रदायिक विधिविधान में बहुत परिवर्तन कर दिया था और निरन्तर प्रवास में तथा जेल में रह कर वहाँ की आवश्यकताओं को पूरा किया। सन् १९४२ में वे फरार हो कर दो वर्ष तक समस्त देश में विद्रोहाग्नि फैलाते घूमते रहे पर हर तरह से पता लगाने की कोशिश करने और गिरफ्तारी के लिए बड़े इनाम की घोषणा करने पर भी सरकार उनको पकड़ न सकी। उस समय वे दिन को सोते और रात को चलते थे और तरह-तरह के उपायों से पुलिस की चालों को विफल करते रहते थे। इस प्रकार उन्होंने अपने अनुयायिओं को बतलाया कि आदर्श का पालन करते हुये व्यवहार में किस प्रकार तदनुकूल कार्यपद्धति का पालन किया जाना चाहिये।

यज्ञमय जीवन—

प्राचीन भारत के यज्ञमय जीवन का यही रहस्य है। मनुष्य अपने अन्तरङ्ग में सर्वथा त्यागी, अपरिग्रही, अनासक्त रहे, पर समाज-सेवा के लिये, किसी के कष्ट निवारण के लिये बड़े से बड़े आयोजन का भार उठाने में भी संकोच न करे। महात्मा गाँधी स्वयं लाखों रुपया चन्दा इकट्ठा कर लेते थे और करोड़ों की थैली को भी स्वीकार कर लेते थे पर उसका उपयोग एक मात्र जन-आन्दोलन और जन-सेवा के लिये ही करते थे। जो लोग त्याग और तपस्या का नाम लेकर किसी मन्दिर या गुफा में बैठे जाते हैं, और किसी का कुछ हित करने की बजाय जनता से कुछ न कुछ ग्रहण करते ही हैं, वे बाबा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

राघवदास के महत्व को नही समझ सकते। बाबा राघवदास ने भी आरम्भ में तीन वर्ष तक गुफा के भीतर रह कर नाम मात्रा के भोजन पर कठिन तपश्चर्या की। बहुत समय तक तो उन्होंने पेड़ की पत्तियाँ ही खाकर निर्वाह किया, पर जब समय आया तो जन-सेवा के लिये तुरन्त बाहर निकल आये और अपनी उस कठोर साधना से प्राप्त शक्ति को जन सेवा में ही लगाया। एक समय वे किसी गाँव में ठहरे थे। अकस्मात् रात के दो-तीन बजे पास के गाँव में आग लगी। चारों तरफ के लोग घटना स्थल की तरफ दौड़े। राघवदासजी नियमित रस्ता छोड़ कर नाक की सीध पर खेतों में होकर दौड़े, जिससे शीघ्र पहुँच सकें। लोगों ने पुकार कर कहा, "उधर होकर मत जाइये। खेतों में अरहर की खूँटियाँ निकली हुई हैं। पर वे उसे अनसुनी करके दौड़ते ही चले गये, यद्यपि उनके पैर लोहू लुहान हो गये। आधमील दौड़कर जलते हुये घर के पास पहुँचे तो उसका मालिक चिल्ला रहा था—"कोई रक्षा करो, मेरे दो बैल भीतर बँधे हैं।" पर आग के कारण बड़े-बड़े जोरदारों की हिम्मत पास जाने की नहीं हो रही थी। बाबाजी एक कम्बल लपेट कर तेजी से भीतर घुस गये और बैलों को खोल दिया। तब तक आग की लपटों ने दर्वाजे को पूरी तरह घेर लिया। लोग भयभीत हो उठे पर बाबाजी एक छलांग मार कर आग में होकर बाहर निकल आये।

अपनी शक्ति और साधनों का उपयोग उन्होंने किस प्रकार यज्ञमय जीवन के लिये किया इसका जिक्र करते हुये उन्होंने एक भाषण में कहा—"यह भूदान कोई आन्दोलन नहीं वरन् एक यज्ञ है। यज्ञ का काम भगवान पूरा करते हैं। इस यज्ञ में पूर्णाहुति तिथि विनोबाजी ने सन् १९५७ नियत कर दी है। जब हम सब इसका निश्चय करके प्रयत्न करेंगे तो भगवान अवश्य मदद करके उसे सफल बनायेंगे। मैंने अपने जीवन में कई बार ऐसे कार्य किये और भगवान तथा जनता ने पूर्ण सहयोग देकर उनको सफल बनाया। सन् १९३३ में बरहज आश्रम से डेढ़ मील के फासले पर तालाब खोद कर वरुण यज्ञ का निश्चय किया। सात दिन का समय था। जेठ का महीना था और गर्मी के

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

कारण भूमि खूब कठोर हो गई थी । मैंने देखा कि एक घण्टा खोदने से ही मेरे हाथों में छाले पड़ गये । पर भगवान की कृपा से दो दिन शाम के समय वर्षा हो गई और सात दिन में तालाब खुद गया । दुबारा १९३४ में हमने महाविष्णु - यज्ञ किया । बिहार में उन दिनों भूचाल आया था । हमने अपने यहाँ से कई हजार रुपया इकट्ठा करके भेजा और एक कार्यकर्त्ताओं का दल कुँओं से रेत निकालने गया । जनता की विपत्ति को समझ कर उस समय हम उस प्रदेश में किसी से सहायता माँगना नहीं चाहते थे । हमने लोगों से केवल राम नाम लेने और जप करने को कहा । पर लोगों ने अपनी इच्छा से बिना माँगे सहायता दी और ८० मन आटा इकट्ठा करके भेजा । अगर मैं सहायता माँगता तो १० मन से अधिक नहीं मिलता । इस प्रकार हम दरभंगा में सेवा कार्य करने में पूर्ण सफल हुये ।

"इसके बाद आया हमारा स्वराज्य - यज्ञ । सन् १९३६ में गोरखपुर जिले में हमारे विरुद्ध चुनाव में ११ राजा खड़े हुये । उन्होंने ५ लाख रु० खर्च करने की घोषणा की और इधर उस समय कांग्रेस की हालत ऐसी कमजोर हो गई थी कि आफिस के लिए ५ रु० महीने के मकान का भी ३ महीने का किराया बकाया था । आटे, दाल, चावल के लिए बनियों का १७ रु० हम पर उधार था । हमने कांग्रेस कमेटी की मीटिंग की । उसमें हमारे मेम्बरों ने इतना पैसा इकट्ठा कर लिया कि हमारा कर्ज पट गया । फिर हमने ५०० मील पैदल यात्रा करने का संकल्प किया । गाँव-गाँव में हमने केवल "तुलसी पत्र" का निमन्त्रण दिया । हमने देखा कि हमारी एक महीने की पद - यात्रा के बाद ३०० वालंटियर (स्वयं सेवक) पद यात्रा के लिए निकल पड़े । इसका फल यह हुआ कि हमारे सभी प्रतिनिधि जीते । वह भी कम वोटों से नहीं, ३५ - ३५ हजार वोटों से ।

" सन् १९३६ में भी एक बाँध बाँधने की बात हमारे सामने आई। गोरखपुर के गगहा नामक स्थान में ४॥ मील लम्बा बाँध बांधना था । हमने सात दिन का सङ्कल्प किया । ३॥ मील बांध ६ दिन में बँध पाया था, पर आपको

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

आश्चर्य होगा कि फिर भी सातवे दिन ठीक समय पर काम पूरा हो गया। सन् १९५७ में ४॥ मील लम्बा एक नाला खोदना था। इसके बिना बलिया जिले की ८ हजार एकड़ जमीन खराब होती थी। हमने १५ जून से २४ जून तक इसे खोद डालने का निश्चय किया। १६ - १७ ता० को वर्षा हो गई। पर उसी में भीगते हुये ५ हजार व्यक्ति काम करते रहे। २३ तारीख तक इस प्रकार श्रम करने पर भी काफी काम शेष रह गया। २४ ता० को ५ हजार की जगह १० हजार व्यक्ति काम पर जुट गये। २५० स्त्रियाँ भी काम करने आईं, जिनमें ऐसी नव विवाहिता बहुएँ भी थीं, जिनके पाँव का महावर भी अभी नहीं छूटा था। २४ ता० को काम पूरा हो गया। नाला खोदने में हमारा कुल १५२ रु० खर्च हुआ जब कि सरकारी योजना में इसके लिये ८० हजार का खर्च लिखा गया था।"

यही एक सच्चे नेता का लक्षण है, कि वह कठिनाई में लोगों का मार्ग प्रदर्शन करे और उनके कंधे से कंधा भिड़ाकर काम करने को सदैव तैयार रहे। वर्तमान समय में तो प्रायः सभी नेता कुर्सीनशीन बन गये हैं या बनना चाहते हैं और कभी - कभी भाषण देकर ही अपने कर्तव्य की पूर्ति मान लेते हैं। यही कारण है कि स्वराज्य हो जाने और इतना हो हल्ला मचने पर पर भी जनता की वास्तविक प्रगति बहुत कम हुई है। यदि आर्थिक दृष्टि से कुछ उन्नति हुई है तो चरित्र की दृष्टि से उससे अधिक गिरावट आ गई है। यह हानि बड़ी शोचनीय है। धन की हानि में तो कोई विशेषता नहीं, क्योंकि हानि - लाभ का जोड़ा तो संसार का एक सुनिश्चित नियम है। पर चरित्र की हानि ऐसी है जिसकी क्षतिपूर्ति कभी नहीं हो सकती और जिसके कारण धीरे-धीरे अन्य अनेक प्रकार की हानियाँ भी सहन करनी पड़ती हैं। बाबा राघवदास जैसे नेताओं की कार्य प्रणाली जनता का उद्धार करने के साथ ही उनके चरित्र के स्तर को भी ऊँचा उठाने वाली थी। इसी लिए आज भी हम उनको भावपूर्वक श्रद्धाञ्जलि देते हैं।

हरिजन उद्धार के लिए व्याकुलता –

बाबा राघवदास ने सामान्य स्तर के लोगों को जो इतना अधिक

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

प्रभावित कर रखा था उसका कारण यही था कि वे एक महापुरुष होते हुए छोटे से छोटे व्यक्तियों के साथ भी अत्यन्त घुल-मिल कर रहते थे और उनके दुःखों को देखकर आन्तरिक वेदना का अनुभव करते थे। इस सम्बन्ध में उनके एक सहकर्मी ने एक घटना का उल्लेख किया है कि "बरसात की काली रात थी। बाबा बाहर गये थे। आश्रम की छत के ऊपर उनकी कोठरी खाली पड़ी थी। मैं उसी में बैठा हुआ वर्षा का आनन्द लेने लगा और धीरे - धीरे निद्रादेवी ने मेरे ऊपर अधिकार कर लिया। बाबा न जाने रात में कब आये और अपने चबूतरे पर सो गये। अँधेरे में उन्होंने मुझे नहीं देखा। प्रातः ४ बजे उनके मधुर स्वर से मेरी नींद टूटी। वे एक बंगला कविता गा रहे थे और सिसक-सिसक कर रो रहे थे। कविता का आशय था — "तुम हमारे मलमूत्र को सफाई करते हो, जाड़े, गर्मी, बरसात में अर्द्धनग्न और आधा पेट रह कर अपने कठिन परिश्रम से हमारी खेती - बारी सँभालते हो। अपने को हमारा अभिन्न अङ्ग मानते हो, गङ्गा, सरयू, राम, कृष्ण के पूजक हो। तो भी हमारे हृदय में तुम्हारे प्रति कृतज्ञता का भाव उदय नहीं हुआ। हमने तुम्हें कुत्ते-बिल्लियों से भी बदतर अछूत बना रखा है। हमारे कवियों की आत्मा तुम्हारे लिये क्यों नहीं रोई ? साधुओं का हृदय क्यों नहीं गला ? हिन्दू जाति ने अपने ही एक वर्ग पर ऐसा अत्याचार क्यों किया ? कदाचित इसी लिये तो प्रभु के न्याय ने हमको गुलाम नहीं बना दिया।"

बाबा इस कविता को आध घण्टे तक गाते रहे और रोते रहे। मुझ से उनका रोना सहा नहीं गया और मैं ने खाँस दिया। वह चौंक पड़े — "कौन है ?" मैंने पूछा — आप इस प्रकार रोते क्यों हैं, बाबाजी ?" "मैं नहीं जानता था कि आप यहाँ सोये हैं। बंगला तो आप जानते हैं न। आप की हिन्दी में है कोई ऐसी कविता ? मैं तो उसी को साहित्य मानता हूँ कि जो या तो जीवन की गहराई में ले जाकर आन्तरिक उद्बोधन करे अथवा समाज के किसी अत्याचार के विरुद्ध हमारे हृदय में व्यथा उत्पन्न करे, सोते समाज को झकझोर कर जगावे। आपने "टाम काका की कुटिया" पढ़ी है। उसमें गुलामी का कैसा

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

 www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org



दर्दनाक वर्णन है। आपकी हिन्दी के किसी कवि या लेखक ने हरिजनों पर होने वाले अत्याचार के विरुद्ध कोई मार्मिक रचना क्यों नहीं की ? पाण्डेय जी, बापू जैसा पुरुष जल्दी फिर नहीं आयेगा। उन्होंने कितनी वेदना और साहस से कहा है—"काश, मेरा जन्म किसी भंगी के घर हुआ होता।" उनके जीतेजी हमें अपनी जाति का यह कलंक धो डालना है, अन्यथा हम बड़े सङ्कट में फँसेंगे। भगवान के घर देर है, अन्धेर नहीं। चार करोड़ हरिजनों को हिन्दू जाति से अलग कर देने का एक सङ्कट उन्होंने जान पर खेल कर अभी टाला है।"

बाबाजी हरिजनों की दुरवस्था को इतना अधिक अनुभव करने लगे थे कि ऐसी किसी भी घटना को देख कर तुरन्त द्रवित हो जाते थे। एक दिन वे अपने मित्र स्वामी सत्यानन्द के हरिजन - गुरुकुल में जा पहुँचे। देखा कि स्वामी जी कुँए पर बैठे एक हरिजन बालक के पैरों को रगड़ - रगड़ कर धो रहे हैं। यह देख कर उनका करुणा - भाव जागृत हो गया और भरे हुए गले से बोले — "स्वामी जी ! आप इतनी बड़ी सेवा कर रहे हैं, मुझ से तो इतना नहीं हो पाता।" स्वामी जी ने कहा — "बाबा जी, आप तो दीनबन्धु हैं। मुझे तो लाला जी (ला० लाजपतराम) ने यह काम सौंपा था उसी को जड़वत किये जा रहा हूँ। बड़े गरीब चमार का लड़का है। गरीबी अर्थात धर्म का नाश। शायद बरसों से इसका पाँव नहीं धोया गया। देखिये न इसके पाँव पर कितना मैल जमा है ! कितने फोड़े निकल आये हैं।"

तब से बाबा जी गरीबों के बच्चों को नहलाने, धुलाने, दूध पिलाने, खेलने - कूदने के लिये जगह - जगह शिशुरक्षा केन्द्रों का स्थापना कराने लगे। वह सदैव हरिजनों को प्राथमिकता देते। एक बार किसी सभा के अध्यक्ष होकर मंच पर बैठे थे। देखा कि सभा के अन्तिम छोर पर एक बुड्ढा गरीब किसान एक अत्यन्त जीर्ण - शीर्ण कपड़े का टुकड़ा लपेटे खड़ा है। वे अपनी जगह से उठे और दौड़ कर उस गरीब को हृदय से लगा लिया। उसे अपने साथ मंच पर ले आये और लोगों से कहा कि ज गरीब किसान हमारे लिये

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इतना परिश्रम करके भोजन - वस्त्र देता है, हम उसके लिये क्या करते हैं ? उसे इस प्रकार आधा भूखा और आधा नंगा रखकर हम किस प्रकार अपना मस्तक ऊँचा उठा सकते हैं !"

वे एक घटना का जिक्र भी प्रायः किया करते थे। एक बार किसी बूढ़े चमार के साथ एक गाँव में जा पहुँचे। जलपान आया तो बूढ़े भगत ने पानी पीने से इनकार कर दिया। उसने कहा कि हमारे गाँव के ठाकुर की बेटी इस गाँव में ब्याही गई है, इस लिये हम इसका पानी नहीं पी सकते। बाबा जी कहते थे—"हमारी जातीय एकता का इससे बड़ा प्रमाण और क्या हो सकता है ? जो इतनी गहराई से हमारे बन चुके हैं उनको हमने अछूत बना रखा है !"

सर्वोदय-प्रचार में आत्माहुति—

इस प्रकार बाबा राघवदास जीवन के अंतिम समय तक देश और जाति की सेवा में संलग्न रहे। अंतिम कई वर्षों तक वे भूदान की पद-यात्रा में भाग लेकर गरीबों के लिये भूमि का दान माँग कर उनके उत्थान के प्रयत्न में ही लगे रहे। इसके लिये वे अपनी स्थापित की हुई लग-भग डेढ़ सौ संस्थाओं से सम्बन्ध तोड़ कर सन्त विनोबा के अनुगामी बने। उन्होंने कहा—"भारत की गरीब जनता का कल्याण बापू की सर्वोदय समाज रचना से ही होगा। ग्रामों को आर्थिक स्वतंत्रता उसी से मिलेगी। सन्त विनोबा उसका पथ प्रशस्त करने निकले हैं। उनका भरपूर स्वागत होना चाहिये।" इस लिये जब सन् १९५१ में उत्तर प्रदेश का कार्यारम्भ करने के लिये एक कार्यकर्ता-सम्मेलन मथुरा में हुआ तो बाबाजी उसमें उपस्थित थे। उनकी प्रेरणा से भूमि हीनों के लिये पाँच लाख एकड़ जमीन माँगने का संकल्प किया गया। इस संकल्प को लेकर विनोबा ने ११ महीने में ३०० मील की पैदल-यात्रा की। इन तमाम दिनों बाबा राघवदास उनके अग्रगामी दल में चलते थे और विनोबा के पहुँचने के पूर्व ही सब तैयारी कर डालते थे। इस बीच में ३००० एकड़ जमीन दान में प्राप्त हुई। जब विनोबा उत्तर प्रदेश से बिहार में प्रविष्ट हुये तो इस

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कार्य का भार यही के कार्यकर्ताओं, विशेषत: बाबा राघवदास के कंधों पर पड़ा और वे निश्चित कार्यक्रम का पूरा करने के लिये रात दिन दौड़ने लगे। लगभग आठ वर्ष तक कठोर परिश्रम (तप) करके उन्होंने एक सौ सम्पूर्ण ग्राम, ५० हजार एकड़ भूमि, ४८ हजार रुपया, ४० हजार की जायदाद, २ हजार मन अन्न ४० जोड़ी बैल, १४०० वृक्ष, ३० कुँए, १५ मकान और लगभग २०० खेती के औजार दान में प्राप्त किये। सर्वोदय सिद्धान्त को उन्होंने लाखों जनता के हृदय तक पहुँच दिया। भूदान-यज्ञ के कार्य की उन्होंने इस प्रकार तन-मन-लगा कर पूर्ति की कि विनोबा ने स्वयं कहा—"कामना मेरी और सफलता बाबाजी की।" दूसरी बार उन्होंने लिखा—"भूमिदान की कल्पना लेकर मैं अकेला था, किन्तु बाबा राघवदास को पाकर मैं एक से दो हो गया।"

सच्चे वैष्णव बाबा राघवदास--

इस प्रकार प्रत्येक क्षेत्र में और प्रत्येक परिस्थिति में काम करने वाले बाबा राघवदास अन्तरङ्ग में सच्चे वैष्णव थे। पर आप इस "वैष्णव" शब्द से सफेद या लाल तिलक लगाने वाले, तुलसी काष्ठ की मोटीसी माला गले में डाले हुये, बड़ा-सा चिमटा लेकर धूनी रमाने वाले वैरागियों की कल्पना मत कीजिये। बाबा राघवदास थे "गान्धी सम्प्रदाय" के वैष्णव, जिनकी प्रार्थना के समय प्राय: नरसी भक्त का "वैष्णव जन तो तेने कहिये जो पीर पराई जाने रे" वाला पद हमेशा गाया जाता था। सन्तों ने भगवान का नाम जपते रहना, कीर्तन करना, उनके मन्दिर में पूजा-उपासना करना, धर्म-कथा सुनना आदिको भगवद्-भक्तों का लक्षण बतलाया है, पर सब से बड़ा लक्षण है "अन्य प्राणियों के कष्टों को समझ कर उनको दूर करने के लिये स्वयं परिश्रम करना—कष्ट सहन करना।" जो दूसरों के दु:ख, विपत्ति को निवारण करने के लिये स्वयं विपत्तियों में कूद पड़ता है वही सच्चा वैष्णव या सच्चा "मनुष्य" माना जा सकता है।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

इस "वैष्णव-धर्म" का पालन करने के लिये बाबा राघवदास बड़े-बड़े आन्दोलनों के संचालन से लेकर गन्दी टट्टियों को साफ करने तक के लिये बिना किसी भेद भाव के तैयार रहते थे। उनकी इन बहुसंख्यक प्रवृत्तियों को देखकर एक सुपरिचित विद्वान् ने कहा था—"बाबाजी ने हिन्दी प्रसार-प्रचार की चेष्टा की, गोरक्षा और खादी का कार्य आगे बढ़ाया, शिक्षण-संस्थायें खोलीं-खुलवाईं, हरिजनों भूकम्प-पीड़ितों, शरणार्थियों में काम किया, वनवासियों की सेवा की, कुष्ठ रोगियों की ओर ध्यान दिया, भूदान का कार्य हाथ में लिया। मतलब कोई सेवा-क्षेत्र उनसे अछूता न था। इतने कामों के लिये वे न जाने कैसे समय निकाल पाते थे, न जाने कैसे उनकी व्यवस्था करते थे।

"कोई कहता है वह आजादी के सैनिक थे, कोई कहता है कि वे ठोस रचनात्मक कार्यकर्ता थे, कोई कहता है वे जन-नायक थे। मुझे यह सब अपूर्ण लगता है, साधना की परछाइयों के समान। भले ही वह इन विभिन्न रूपों में दिखाई पड़ते हों, पर वस्तुतः वह आध्यात्मिक, अन्तः साधक थे, जिनके अन्तर से करुणा की वह धारा फूटी थी जो व्यक्ति के समाष्टि हो जाने पर फूटती है। राजनीतिक कार्यकर्ता में आसक्ति होती है, सामाजिक कार्यकर्ता में यशैषणा और सामाजिकता का अभिमान होता है, नेता में जन-साधारण से पृथकता की भावना होती है। बाबाजी की सब से बड़ी सिद्धि यही थी कि उनमें किसी तरह का अभिमान नहीं रह गया था। देश की कोटि-कोटि दरिद्र जनता ही उनकी आराध्या थी। इस निरभिमानिता एवं पर दुःख कातरता के कारण ही लक्ष-लक्ष भारतीय जनता उनके प्रति अपना प्रेम बरसाती थी। वह उसके अपने हो गये थे। इस लिये उन्होंने जो काम उठाया तेजी ने बढ़ा और सफल हुआ। चालीस वर्ष पूर्व उत्तर प्रदेश का पूर्वोत्तर भाग, एक मात्र काशी को छोड़कर, शिक्षा में इतना अधिक पिछड़ा था कि उसकी अब कल्पना भी नहीं की जा सकती। पर बाबा राघवदास की प्रेरणा से पचासों हाईस्कूल इन जिलों में खुल गये। उसी तपस्या की नींव पर अब गोरखपुर में विश्व-विद्यालय स्थापित हो चुका है और

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इन सभी जिलों में इण्टर मीडिएट कालेजों की भरमार हो गई है और दो-दो, एक-एक डिग्री कालेज भी खुल गये हैं।"

सच्चे जन-सेवक ऐसे ही होते है। ऐसे महान पुरुष स्वयं सामान्य बने रहने पर भी दूसरे हजारों को आगे बढ़ा देते हैं। बाबा राघवदास स्वयं चाहे मैट्रिक तक ही पढ़े हों पर उनके प्रयत्नों के फल स्वरूप हजारों व्यक्ति एम० ए० और उससे भी उच्च शिक्षा प्राप्त कर चुके होंगे। देश का अभाग्य है कि आजकल सार्वजनिक क्षेत्र में ऐसे सच्चे कार्यकर्ताओं का दिन पर दिन अभाव होता जाता है और ऊपर से चाहे सेवा का कैसा भी ढोल क्यों न पीटा जाय भीतर स्वार्थपरता की भावना ही जोर पकड़ रही है।

लगभग चार-पाँच वर्ष उत्तर प्रदेश में भूदान और संपत्तिदान का कार्यक्रम पूरा करके वे इसी लक्ष्य की पूर्त्ति के लिये मध्य प्रदेश में पहुँचे। वहाँ के आदिवासियों की गरीबी और भुखमरी देख कर तो उनकी वेदना चरम सीमा पर पहुँच गई। पाँच रात और पाँच दिन उन्होंने भोजन त्याग दिया। वे कहते थे कि जंगलों और पहाड़ियों में रहने वाले इन आदिवासियों को आहार नहीं मिलता तो मैं उन भूखों के बीच में रह कर भोजन कैसे करूँ? अन्त में उस प्रदेश की सरकार को उन गरीबों की तरफ ध्यान देना ही पड़ा और अन्न की व्यवस्था करनी पड़ी।

मध्य प्रदेश में वे जी तोड़ कर सेवा-कार्य में जुट गये। साथियों ने कुछ विश्राम करते रहने को बहुत कहा सुना पर उन्होंने यही उत्तर दिया—"मुझे रोको मत! आगे बढ़ने दो। मैं अब रुकूँगा नहीं, बढ़ता चलूँगा और कहीं गिर कर देश की मिट्टी में मिल जाऊँगा। बड़ी गरीबी है, बड़ा दुःख है। अब इसे देख नहीं सकता।" बस इसी धुन में वे आगे बढ़ कर काम करते रहे। जाड़ा आ गया और उनके पास वस्त्र बहुत कम थे। इससे ठंड लग कर ८ जनवरी १९५८ को उनके फेंफड़े में शीत समा गया और ज्वर आ गया। तो भी अपनी बीमारी को छिपा कर तीन दिन तक सिवनी के सर्वोदय

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सम्मेलन में दोनों समय भाषण करते रहे। १२ ता० को वे अशक्त होकर गिर गये और १५ जनवरी को उन्होंने अंतिम साँस लेकर शरीर को त्याग दिया।

बाबा राघवदास का जीवन इस बात का उदाहरण है कि यदि हृदय में लगन हो तो मनुष्य सर्वथा साधन रहित होने पर भी बड़े से बड़ा काम कर सकता है। उनके घर वाले बाल्यावस्था में ही उनको अनाथ बना कर परलोक जा चुके थे, शिक्षा-दीक्षा भी साधारण ही हो सकी थी। पास में एक भी पैसा न था, पर उन्होंने केवल अपने परिश्रम और सच्ची लगन के आधार पर लाखों पतित और निराश्रित लोगों का उद्धार कर दिया। उनके चरित्र को पढ़ कर कौन कह सकता है कि हम सेवा और परोपकार का कार्य करने में साधन-हीन अथवा असमर्थ हैं।

--✱--

मुद्रक—युग निर्माण प्रेस, गायत्री तपोभूमि मथुरा।

Free Read/Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya(Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi & other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उत्कृष्ट व्यक्तियों के जीवन-चरित्र जन-मानस में मानवीय आदर्शवादिता के लिये आस्था उत्पन्न करते हैं। कहना न होगा कि यह निष्ठा ही लोक-मंगल का मूल आधार है। इसलिये आदर्शवादी व्यक्तियों की जीवन-गाथाओं को अधिकाधिक जानकारी जन-कल्याण की दृष्टि से अतीव उपयोगी एवं आवश्यक मानी जाती रही है।

युग-निर्माण योजना द्वारा विचार-क्रान्ति के लिये जिस अभिनव साहित्य का निर्माण किया जा रहा है उसमें महामानवों के जीवन-चरित्रों की सीरीज को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। प्रस्तुत पुस्तक उन्हीं में से एक है। ऐसे-ऐसे अनेक जीवन-चरित्र छापे जा रहे हैं। हर महीने उनकी संख्या बढ़ जाती है। उनकी जानकारी पत्र लिखकर प्राप्त की जा सकती है। सभी जीवन-चरित्र इसी पुस्तक की भाँति ३२ पृष्ठों में हैं। उनका मूल्य ४० पैसा है।

मानवीय आदर्शों के प्रति आस्था रखने वाले प्रत्येक विचारशील व्यक्ति से यह आशा की जाती है कि वे इस साहित्य को स्वयम् पढ़ें और अपने परिवार तथा साथियों को भी इसे पढ़ावें, सुनावें।

'युग-निर्माण योजना' मथुरा।

मूल्य ४० पैसा

मूल्य—पचास पैसा

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :



ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें : http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता :** विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार :** जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक :** मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार :** जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता :** जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्दघोषक :** जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी :** जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक :** जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी :** जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक :** जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक :** जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक :** जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना :** जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org